प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे
एम.ए.,एम्.फिल.,पीएच्.डी.
अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग,
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय,
सातारा

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री. विवेक बाबुराव साळुंखे** ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए **''हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में आदिम जनजीवन का चित्रण'' (जंगल के फूल, जाने कितनी आँखें, वनवासी, शैलूष के संदर्भ में)** शीर्षक से प्रस्तुत लघु- शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक, पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह शोधार्थी की मौलिक कृति है। जो तथ्य इस लघु-शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं ,मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं। श्री. विवेक बाबुराव साळुंखे के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में पूरी तरह सन्तुष्ट हूँ। इस लघु-शोध-प्रबंध को आद्योपांत पढकर ही मैं इसे परिक्षणार्थ अग्रेषित करने हेतु अनुमति प्रदान करता हूँ।

स्थान : सातारा

दिनांक : 27 जून, 2006

शोध-निर्देशक

(प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे)

अनुशंसा

हम अनुशंसा करते है कि **श्री. विवेक बाबुराव साळुंखे** का एम. फिल (हिंदी) का लघु-शोध-प्रबंध, **''हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में आदिम जनजीवन का चित्रण'', (जंगल के फूल, जाने कितनी आँखें, वनवासी, शैलूष के संदर्भ में)** परिक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

प्रा. डॉ. बी. डी. सगरे
हिंदी विभाग
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा

L. B. S. COLLEGE SATARA

सुहास साळुंखे
प्राचार्य
लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय
सातारा

प्रख्यापन

यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्र

स्थान : सातारा

दिनांक : 4 जून 2006

(विवेक बाबुराव साळुंखे)